# सूअर के बालों के उत्पाद और आजीविका

**अनिल सिंह सोलंकी**

सूअर बालों से निर्मित बहुउपयोगी, मूल्य संवर्धित उत्पाद, जैसे सफाई करने, कपड़े धोने, जूते, कालीन और फर्नीचर की सफाई के लिए ब्रश का निर्माण देश में सर्वप्रथम भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर.) के बारापानी कॉम्प्लेक्स ने मेघालय में शुरू कर दिया है। इन अलग-अलग चीज़ों का निर्माण सूअर के शरीर के विभिन्न हिस्सों पर पाए जाने वाले बालों से किया गया है। उदाहरण के लिए मध्य भाग से जूते का ब्रश, पीठ और कमर वाले क्षेत्र से सफाई का ब्रश और कालीन-ब्रश एवं आधार भाग से कंघी-ब्रश बनाया जा रहा है। हालांकि इनका दायरा अभी आई.सी.ए.आर. की प्रयोगशाला तक ही सीमित है, फिर भी देश-विदेश में इन उत्पादों को निर्यात करने के लिए संस्था द्वारा किसानों को इस दिशा में प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

सूअर उत्तर-पूर्वी इलाकों की जनजातियों का लोकप्रिय पशु है। देश में कुल सूअर आबादी का 28 प्रतिशत केवल उत्तर-पूर्वी इलाकों में पाया जाता है। यहां सूअर की उपलब्धता देश में सबसे ज़्यादा है। यहां लगभग 80 प्रतिशत लोग मांसाहारी है, और सूअर का मांस या पोर्क की खपत लगभग 80-85 टन प्रति वर्ष के आसपास होती है। अतः लगभग 15.35 लाख सूअरों की बली संगठित एवं गैर-संगठित क्षेत्रों में हर साल दी जाती है। बाद में, सूअर के बालों को वातावरण में 'पशु-कचरा' मानकर या तो जला दिया जाता रहा है या यूं ही फेंक दिया जाता रहा है। प्रकृति में ये आसानी से विघटित नहीं होते और इस वजह से वातावरण प्रदूषित हो रहा है। आई.सी.ए.आर., बारापानी की यह तकनीक न केवल प्रदूषण कम करने में सहायक है, बल्कि एक प्रशिक्षित व्यक्ति दिन भर में 4-5 मध्यम आकार के ब्रश बनाकर जीविका अर्जित कर सकता है।

इस विषय पर शोध कर रहे वरिष्ठ वैज्ञानिक गोविन्दस्वामी कादिरवेल के मुताबिक प्रति वर्ष एक सूअर से 300-400 ग्राम बालों का उत्पादन हो सकता है। इस हिसाब से, अकेले संगठित क्षेत्र में 10-12 हज़ार क्विंटल बाल का उत्पादन कृषकों द्वारा बड़ी आसानी से किया जा सकता है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में किसानों को इनकी अच्छी कीमत मिल सकती है। कुदरती बाल सिंथेटिक की तुलना में अधिक टिकाऊ, और लचीले हैं जिससे कठिन और दुर्गम जगहों की गंदगी को आसानी से साफ किया जा सकता है। अन्य पशु फाइबर की तुलना में सूअर-बाल में अनूठे भौतिक, यांत्रिक और रासायनिक गुण होते हैं, जो मूल्य संवर्धित उत्पाद के लिए अहम होते हैं।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में 65 प्रतिशत से अधिक लोग कृषि पर निर्भर हैं। बढ़ती आबादी, घटते प्राकृतिक संसाधन एवं जलवायु परिवर्तन ने कृषि को किसानों के लिए एक जोखिम भरा व्यवसाय बना दिया है। कृषि विज्ञान और तकनीकों पर आधारित नवाचारी परियोजनाएं खेती की इन समस्याओं को काफी हद तक हल कर उपलब्ध संसाधनों से किसानों की जीविका उपार्जन में वृद्धि करने में सफल हुई हैं। हालांकि शिलांग बाज़ार में एक सर्वेक्षण में पाया गया कि सूअर-बाल बेचने और खरीदने का काम यहां विगत कई वर्षों से हो रहा है, लेकिन उनसे निर्मित उत्पाद बनाने का कोई भी खास ठोस सबूत नहीं मिला है।

सूअर वधशाला में कार्यरत कर्मचारी इन बालों को एकत्रित करके हर छः महीने में बाहरी खरीदारों - जो मुख्य रूप से मुंबई से आते हैं - को एक मामूली रकम पर बेच देते है। विडंबना यह है कि न तो सूअर पालकों को और न ही यहां

के किसानों को इस बात की कोई जानकारी है।

चीन और युरोप के कई देशों में सूअर-बाल से बने ब्रुश और कंघी अधिक प्रचलन में है, वहीं भारत में संश्लेषित वस्तुओं से निर्मित विभिन्न प्रकार के उत्पाद ही उपयोग में लाए जा रहे है। अगर इन पर ध्यान दें तो उत्तर-पूर्वी क्षेत्र से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सूअर-बालों या उनसे निर्मित उत्पादों को निर्यात किया जा सकता है, और इस तरह किसानों की आय में इज़ाफा किया जा सकता है। ***(स्रोत फीचर्स)***